भारत में कहीं-कहीं euclave Economy

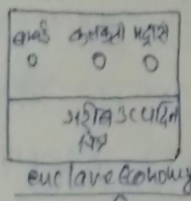

की शुरुआत होते-होते pockets में हुयी जहाँ पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली दिखायी पड़ती है किन्तु बाकी क्षेत्रों में पूर्व पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली बनी रहती है (भारतीय सन्दर्भ में सामंतवादी उत्पादन प्रणाली शब्द का प्रयोग नहीं करते हैं)। भारतीय अर्थव्यवस्था का 1957 के बाद पूर्व पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली से पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली में पुरी तरह रूपान्तरण नहीं किया जाता। परिणामतः भारतीय अर्थ० पूर्व पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली के रूप में बनी रहती है हाँ, कुछ euclave (छोटे pockets) में Capitalist Mode of productionभी दिख पड़ता है। किन्तु, Euclave की ताकत इतनी ज्यादा नहीं थी कि वह गरीबी की खाई को पाट सके। बाकी भारतीय व्यवस्था इतनी सक्षम नहीं थी कि वह euclave व्यवस्था में परिणत हो जाते। दोनो की अपनी सीमाएं

थी। यद्यपि enclave Economy बाकी भारत का आधुनीकि नहीं कर सका तथापि वहाँ से वह अपने Resorces को लेता है लेकिन बदले में पूरे भारत को कुछ नहीं दे पाता। इसे सीमित विकास उपागम या Arested growth model कहते हैं। यही कारण ही है कि 200 वर्षों के औपनिवेशिक शासन के दौरान जहाँ समृद्धि के कुछ द्वीप दिखायी देते है वहीं बाकी हिन्दुस्तान में गरीबी की घाटियाँ दिखती है जो निरंतर बढ़ती जाती हैं।

वामपन्थि इतिहासकारों द्वारा जिस सीमा विकास उपागम को जन्म दिया गया, उसमें सैद्धान्तिक रूप से कोई अन्तरविरोध दिखायी नहीं पड़ता। अवधारणा के धरातल पर यह मॉडल सही है। परन्तु वास्तविकता एक दूसरी है। वास्तव में उपनिवेशवाद उत्पादन का एक रिश्ता भर नहीं है बल्कि उपनिवेशवाद उत्पादन की एक प्रणाली है।

यह ऐसी उत्पादन प्रणाली है जिसके दो ही परिणाम संभव हैं

1. साम्राज्यवादी देश में पूंजीवादी विकास.
2. उपनिवेश में पिछड़ापन या अल्प विकास का विकास

निष्कर्ष - मार्क्सवादी लेखन उपनिवेशवाद को पूरी तरह समझ नहीं पाता। अतः सीमित स्पष्टीकरण कर पाता है, अगर वास्तविकता